يُّلْقُوْنَ السَّمْعَ وَاَكْثَرُهُمْ كٰذِبُوْنَ ﴿۲۲۳﴾ وَالشُّعَرَآءُ يَتَّبِعُهُمُ الْغَاوٗنَ ﴿۲۲۴﴾

शैतान अपनी सुनी हुई[186] उन पर डालते हैं और उन में अक्सर झूटे हैं[187] और शाइरों की पैरवी गुमराह करते हैं[188]

اَلَمْ تَرَ اَنَّهُمْ فِیْ كُلِّ وَادٍ یَّهِیْمُوْنَ ﴿۲۲۵﴾ وَاَنَّهُمْ یَقُوْلُوْنَ مَا لَا یَفْعَلُوْنَ ﴿۲۲۶﴾

क्या तुम ने न देखा कि वोह हर नाले में सरगर्दां फिरते हैं[189] और वोह कहते हैं जो नहीं करते[190]

اِلَّا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَذَكَرُوا اللّٰهَ كَثِیْرًا وَّانْتَصَرُوْا مِنْۢ

मगर वोह जो ईमान लाए और अच्छे काम किये[191] और ब कसरत **अल्लाह** की याद की[192] और बदला लिया[193] बा'द

بَعْدِ مَا ظُلِمُوْا ؕ وَسَیَعْلَمُ الَّذِیْنَ ظَلَمُوْۤا اَیَّ مُنْقَلَبٍ یَّنْقَلِبُوْنَ ﴿۲۲۷﴾ ع ۱۱ ۱۶ ۱۵

इस के कि उन पर ज़ुल्म हुवा[194] और अब जाना चाहते हैं ज़ालिम[195] कि किस करवट पर पलटा खाएंगे[196]

اٰیاتها ۹۳ ۲۷ سُوْرَةُ النَّمْلِ مَكِّیَّةٌ ۴۸ رکوعاتها ۷

सूरए नम्ल मक्किय्या है, इस में तिरानवे आयतें और सात रुकूअ़ हैं

इस के बा'द **अल्लाह** तआ़ला उन मुश्रिकों के जवाब में जो कहते थे कि मुहम्मद صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم पर शैतान उतरते हैं, येह इर्शाद फ़रमाता है : **185 :** मिस्ल मुसैलमा वग़ैरा काहिनों के। **186 :** जो उन्हों ने मलाएका से सुनी होती है। **187 :** क्यूं कि वोह फ़िरिश्तों से सुनी हुई बातों में अपनी त़रफ़ से बहुत झूट मिला देते हैं। ह़दीस शरीफ़ में है कि एक बात सुनते हैं तो सो झूट उस के साथ मिलाते हैं और येह भी उस वक़्त तक था जब तक कि वोह आस्मान पर पहुंचने से रोके न गए थे। **188 :** उन के अश्आ़र में कि उन को पढ़ते हैं रवाज देते हैं बा वुजूदे कि वोह अश्आ़र किज़्ब व बात़िल होते हैं। **शाने नुज़ूल :** येह आयत शुअ़राए कुफ़्फ़ार के ह़क़ में नाज़िल हुई जो सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم की हज्व में शे'र कहते थे और कहते थे कि जैसा मुह़म्मद صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم कहते हैं ऐसा हम भी कह लेते हैं और उन की क़ौम के गुमराह लोग उन से उन अश्आ़र को नक़्ल करते थे, उन लोगों की आयत में मज़म्मत फ़रमाई गई। **189 :** और हर त़रह़ की झूटी बातें बनाते हैं और हर लग़्व व बात़िल में सुख़न आराई करते हैं, झूटी मद्ह़ करते हैं, झूटी हज्व करते हैं। **190 :** बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस में है कि अगर किसी का जिस्म पीप से भर जाए तो येह उस के लिये इस से बेहतर है कि शे'र से पुर हो। मुसल्मान शुअ़रा जो इस त़रीक़े से इज्तिनाब करते हैं इस हुक्म से मुस्तस्ना किये गए। **191 :** इस में शुअ़राए इस्लाम का इस्तिस्ना फ़रमाया गया, वोह हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم की ना'त लिखते हैं, **अल्लाह** तआ़ला की ह़म्द लिखते हैं, इस्लाम की मद्ह़ लिखते हैं, पन्दो नसाएह़ लिखते हैं, इस पर अज्रो सवाब पाते हैं। बुख़ारी शरीफ़ में है कि मस्जिदे नबवी में ह़ज़रते ह़स्सान के लिये मिम्बर बिछाया जाता था, वोह उस पर खड़े हो कर रसूले करीम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم के मुफ़ाख़र पढ़ते (फ़ज़ाइल बयान फ़रमाते) थे और कुफ़्फ़ार की बद गोइयों का जवाब देते थे और सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم उन के ह़क़ में दुआ़ फ़रमाते थे। बुख़ारी की ह़दीस में है : हुज़ूर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : बा'ज़ शे'र ह़िक्मत होते हैं। रसूले करीम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم की मजलिस मुबारक में अक्सर शे'र पढ़े जाते थे जैसा कि तिरमिज़ी में जाबिर बिन समुरह से मरवी है। ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने फ़रमाया कि शे'र कलाम है बा'ज़ अच्छा होता है बा'ज़ बुरा, अच्छे को लो बुरे को छोड़ दो। शअ़बी ने कहा कि ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ शे'र कहते थे। ह़ज़रते अ़ली उन सब से ज़ियादा शे'र फ़रमाने वाले थे। رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم। **192 :** और शे'र उन के लिये ज़िक्रे इलाही से ग़फ़्लत का सबब न हो सका, बल्कि उन लोगों ने जब शे'र कहा भी तो **अल्लाह** तआ़ला की ह़म्दो सना और उस की तौह़ीद और रसूले करीम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم की ना'त और अस्ह़ाबे किराम व सुलह़ाए उम्मत की मद्ह़ और ह़िक्मत व मौइज़त और ज़ोहदो अदब में। **193 :** कुफ़्फ़ार से उन की हज्व का **194 :** कुफ़्फ़ार की त़रफ़ से कि उन्हों ने मुसल्मानों की और उन के पेशवाओं की हज्व की। उन ह़ज़रात ने उस को दफ़्अ़ किया और उस के जवाब दिये, येह मज़मूम नहीं हैं बल्कि मुस्तह़िक़्क़े अज्रो सवाब हैं। ह़दीस शरीफ़ में है कि मोमिन अपनी तलवार से भी जिहाद करता है और अपनी ज़बान से भी, येह उन ह़ज़रात का जिहाद है। **195 :** या'नी मुश्रिकीन जिन्हों ने सय्यिदुत्त़ाहिरीन अफ़्ज़लुल ख़ल्क़ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم की हज्व की। **196 :** मौत के बा'द। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया जहन्नम की त़रफ़ और वोह बुरा ही ठिकाना है।

www.dawateislami.net

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला[1]

طٰسٓ قف تِلْكَ اٰيٰتُ الْقُرْاٰنِ وَ كِتَابٍ مُّبِيْنٍ ۙ﴿۱﴾ هُدًى وَّ بُشْرٰى

येह आयतें हैं कुरआन और रोशन किताब की[2] हिदायत और खु़श ख़बरी

لِلْمُؤْمِنِيْنَ ۙ﴿۲﴾ الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَ يُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَ هُمْ

ईमान वालों को वोह जो नमाज़ बरपा रखते हैं[3] और ज़कात देते हैं[4] और वोह

بِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ﴿۳﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ زَيَّنَّا

आख़िरत पर यक़ीन रखते हैं वोह जो आख़िरत पर ईमान नहीं लाते हम ने उन के

لَهُمْ اَعْمَالَهُمْ فَهُمْ يَعْمَهُوْنَ ؕ﴿۴﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَهُمْ سُوْٓءُ الْعَذَابِ وَ

कौतक (बुरे आ'माल) उन की निगाह में भले कर दिखाए हैं[5] तो वोह भटक रहे हैं येह वोह हैं जिन के लिये बुरा अ़ज़ाब है[6] और

هُمْ فِي الْاٰخِرَةِ هُمُ الْاَخْسَرُوْنَ ﴿۵﴾ وَ اِنَّكَ لَتُلَقَّى الْقُرْاٰنَ مِنْ لَّدُنْ

येही आख़िरत में सब से बढ़ कर नुक़्सान में[7] और बेशक तुम कुरआन सिखाए जाते हो हिक्मत

حَكِيْمٍ عَلِيْمٍ ﴿۶﴾ اِذْ قَالَ مُوْسٰى لِاَهْلِهٖۤ اِنِّیْۤ اٰنَسْتُ نَارًا ؕ سَاٰتِيْكُمْ

वाले इ़ल्म वाले की त़रफ़ से[8] जब कि मूसा ने अपनी घर वाली से कहा[9] मुझे एक आग नज़र पड़ी है अ़न्क़रीब मैं तुम्हारे पास

مِّنْهَا بِخَبَرٍ اَوْ اٰتِيْكُمْ بِشِهَابٍ قَبَسٍ لَّعَلَّكُمْ تَصْطَلُوْنَ ﴿۷﴾ فَلَمَّا جَآءَهَا

उस की कोई ख़बर लाता हूं या उस में से कोई चमकती चिंगारी लाऊंगा कि तुम तापो[10] फिर जब आग के पास आया

نُوْدِيَ اَنْۢ بُوْرِكَ مَنْ فِي النَّارِ وَ مَنْ حَوْلَهَا ؕ وَ سُبْحٰنَ اللّٰهِ رَبِّ

निदा की गई कि बरकत दिया गया वोह जो इस आग की जल्वा गाह में है या'नी मूसा और जो इस के आस पास हैं या'नी फ़िरिश्ते[11] और पाकी है अल्लाह को

الثلث

1 : सूरए नम्ल मक्किय्या है इस में सात 7 रुकूअ़ और तिरानवे 93 आयतें और एक हज़ार तीन सो सतरह 1317 कलिमे और चार हज़ार सात सो निनानवे 4799 ह़र्फ़ हैं। 2 : जो ह़क़ व बात़िल में इम्तियाज़ करती है और जिस में उ़लूमो ह़िकम वदीअ़त रखे गए हैं। 3 : और इस पर मुदावमत करते हैं और इस के शराइत़ व आदाब व जुम्ला हुक़ूक़ की ह़िफ़ाज़त करते हैं 4 : ख़ुशदिली से 5 : कि वोह अपनी बुराइयों को शहवात के सबब से भलाई जानते हैं। 6 : दुन्या में क़त्ल और गिरिफ़्तारी 7 : कि इन का अन्जाम दाइमी अ़ज़ाब है। इस के बा'द सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को ख़िताब होता है : 8 : इस के बा'द ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام का एक वाक़िआ़ बयान फ़रमाया जाता है जो दक़ाइक़े इ़ल्म व लत़ाइफ़े ह़िक्मत पर मुश्तमिल है। 9 : मद्यन से मिस्र को सफ़र करते हुए, तारीक रात में, जब कि बर्फ़बारी से निहायत सरदी हो रही थी और रास्ता गुम हो गया था और बीबी साह़िबा को दर्दे ज़ेह शुरूअ़ हो गया था। 10 : और सरदी की तक्लीफ़ से अम्न पाओ। 11 : येह ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की तह़िय्यत है अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ से बरकत के साथ।

الْعٰلَمِيْنَ ﴿٨﴾ يٰمُوْسٰۤى اِنَّهٗۤ اَنَا اللّٰهُ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٩﴾ وَاَلْقِ عَصَاكَ ؕ

जो रब है सारे जहां का ऐ मूसा बात येह है कि मैं ही हूं अल्लाह इ़ज़्ज़त वाला हिक्मत वाला और अपना अ़सा डाल दे[12]

فَلَمَّا رَاٰهَا تَهْتَزُّ كَاَنَّهَا جَآنٌّ وَّلّٰى مُدْبِرًا وَّلَمْ يُعَقِّبْ ؕ يٰمُوْسٰى

फिर मूसा ने उसे देखा लहराता हुवा गोया सांप है पीठ फेर कर चला और मुड़ कर न देखा हम ने फ़रमाया ऐ मूसा

لَا تَخَفْ ۫ قف اِنِّىْ لَا يَخَافُ لَدَىَّ الْمُرْسَلُوْنَ ﴿١٠﴾ صلے اِلَّا مَنْ ظَلَمَ ثُمَّ بَدَّلَ

डर नहीं बेशक मेरे हुज़ूर रसूलों को ख़ौफ़ नहीं होता[13] हां जो कोई ज़ियादती करे[14] फिर बुराई के

حُسْنًۢا بَعْدَ سُوْٓءٍ فَاِنِّىْ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١١﴾ وَاَدْخِلْ يَدَكَ فِىْ جَيْبِكَ

बा'द भलाई से बदले तो बेशक मैं बख़्शने वाला मेहरबान हूं[15] और अपना हाथ अपने गिरेबान में डाल

تَخْرُجْ بَيْضَآءَ مِنْ غَيْرِ سُوْٓءٍ ۫ قف فِىْ تِسْعِ اٰيٰتٍ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَقَوْمِهٖ ؕ

निकलेगा सफ़ेद चमक्ता बे ऐ़ब[16] नव निशानियों में[17] फ़िरऔ़न और उस की क़ौम की त़रफ़

اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ﴿١٢﴾ فَلَمَّا جَآءَتْهُمْ اٰيٰتُنَا مُبْصِرَةً قَالُوْا هٰذَا

बेशक वोह बे हुक्म लोग हैं फिर जब हमारी निशानियां आंखें खोलती उन के पास आइं[18] बोले येह तो

سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿١٣﴾ ج وَجَحَدُوْا بِهَا وَاسْتَيْقَنَتْهَآ اَنْفُسُهُمْ ظُلْمًا وَّعُلُوًّا ؕ

सरीह़ जादू है और उन के मुन्किर हुए और उन के दिलों में उन का यक़ीन था[19] ज़ुल्म और तकब्बुर से

فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿١٤﴾ ع وَلَقَدْ اٰتَيْنَا دَاوٗدَ وَسُلَيْمٰنَ عِلْمًا ۚ ع ١٤/١٦

तो देखो कैसा अन्जाम हुवा फ़सादियों का[20] और बेशक हम ने दावूद और सुलैमान को बड़ा इ़ल्म अ़त़ा फ़रमाया[21]

وَقَالَا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ فَضَّلَنَا عَلٰى كَثِيْرٍ مِّنْ عِبَادِهِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٥﴾ وَ

और दोनों ने कहा सब ख़ूबियां अल्लाह को जिस ने हमें अपने बहुत से ईमान वाले बन्दों पर फ़ज़ीलत बख़्शी[22] और

12 : चुनान्चे ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने ब हुक्मे इलाही अ़सा डाल दिया और वोह सांप हो गया। 13 : न सांप का न किसी और चीज़ का या'नी जब मैं उन्हें अम्न दूं तो फिर क्या अन्देशा। 14 : उस को डर होगा और वोह भी जब तौबा करे 15 : तौबा क़बूल फ़रमाता हूं और बख़्श देता हूं। इस के बा'द ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالتَّسْلِيْمَات को दूसरी निशानी दिखाई गई और फ़रमाया गया 16 : येह निशानी है उन 17 : जिन के साथ रसूल बना कर भेजे गए हो। 18 : या'नी उन्हें मो'जिज़े दिखाए गए। 19 : और वोह जानते थे कि बेशक येह निशानियां अल्लाह की त़रफ़ से हैं लेकिन बा वुजूद इस के अपनी ज़बानों से इन्कार करते रहे। 20 : कि ग़र्क़ कर के हलाक किये गए 21 : या'नी इल्मे क़ज़ा व सियासत। और ह़ज़रते दावूद को पहाड़ों और परिन्दों की तस्बीह़ का इल्म दिया और ह़ज़रते सुलैमान को चौपायों और परिन्दों की बोली का। (خازن) 22 : नुबुव्वत व मुल्क अ़त़ा फ़रमा कर और जिन्न व इन्स और शयात़ीन को मुसख़्ख़र कर के।

www.dawateislami.net

وَوَرِثَ سُلَيْمٰنُ دَاوٗدَ وَقَالَ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ عُلِّمْنَا مَنْطِقَ الطَّيْرِ وَاُوْتِيْنَا

सुलैमान दावूद का जा नशीन हुवा[23] और कहा ऐ लोगो हमें परिन्दों की बोली सिखाई गई और हर चीज़ में

مِنْ كُلِّ شَيْءٍ ؕ اِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْفَضْلُ الْمُبِيْنُ ﴿۱۶﴾ وَحُشِرَ لِسُلَيْمٰنَ

से हम को अ़ता हुवा[24] बेशक येही ज़ाहिर फ़ज़्ल है[25] और जम्अ़ किये गए सुलैमान के लिये

جُنُوْدُهٗ مِنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ وَالطَّيْرِ فَهُمْ يُوْزَعُوْنَ ﴿۱۷﴾ حَتّٰۤى اِذَاۤ اَتَوْا

उस के लश्कर जिन्नों और आदमियों और परिन्दों से तो वोह रोके जाते थे[26] यहां तक कि जब च्यूंटियों

عَلٰى وَادِ النَّمْلِ ۙ قَالَتْ نَمْلَةٌ يّٰۤاَيُّهَا النَّمْلُ ادْخُلُوْا مَسٰكِنَكُمْ ۚ لَا

के नाले पर आए[27] एक च्यूंटी बोली[28] ऐ च्यूंटियों अपने घरों में चली जाओ तुम्हें

يَحْطِمَنَّكُمْ سُلَيْمٰنُ وَجُنُوْدُهٗ ۙ وَهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿۱۸﴾ فَتَبَسَّمَ ضَاحِكًا مِّنْ

कुचल न डालें सुलैमान और उन के लश्कर बे ख़बरी में[29] तो उस की बात से मुस्कुरा कर

قَوْلِهَا وَقَالَ رَبِّ اَوْزِعْنِيْۤ اَنْ اَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِيْۤ اَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَ

हंसा[30] और अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब मुझे तौफ़ीक़ दे कि मैं शुक्र करूं तेरे एहसान का जो तू ने[31] मुझ पर और

عَلٰى وَالِدَيَّ وَاَنْ اَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضٰىهُ وَاَدْخِلْنِيْ بِرَحْمَتِكَ فِيْ عِبَادِكَ

मेरे मां बाप पर किये और येह कि मैं वोह भला काम करूं जो तुझे पसन्द आए और मुझे अपनी रह़मत से अपने उन बन्दों में शामिल कर जो तेरे कुर्बे ख़ास के

23 : नुबुव्वत व इल्म व मुल्क में **24 :** या'नी ब कसरत ने'मतें दुन्या व आख़िरत की हम को अ़ता फ़रमाई गईं। **25 :** मरवी है कि ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالتَّسْلِيْمَات को **अल्लाह** तआ़ला ने मशारिक़ व मग़ारिब अर्ज़ का मुल्क अ़ता फ़रमाया, चालीस साल आप इस के मालिक रहे फिर तमाम दुन्या की मम्लुकत अ़ता फ़रमाई। जिन्न, इन्सान, शैत़ान, परिन्द, चौपाए, दरिन्दे सब पर आप की हुकूमत थी और हर एक शै की ज़बान आप को अ़ता फ़रमाई और अ़ज़ीबो ग़रीब सन्अ़तें आप के ज़माने में बरूए कार आईं। **26 :** आगे बढ़ने से, ताकि सब मुज्तमअ़ हो जाएं फिर चलाए जाते थे। **27 :** या'नी त़ाइफ़ या शाम में उस वादी पर गुज़रे जहां च्यूंटियां ब कसरत थीं। **28 :** जो च्यूंटियों की मलिका थी वोह लंगड़ी थी। **लत़ीफ़ा :** जब ह़ज़रते क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कूफ़ा में दाख़िल हुए और वहां की ख़ल्क़ आप की गिरवीदा हुई तो आप ने लोगों से कहा : जो चाहो दरयाफ़्त करो। ह़ज़रते इमाम अबू ह़नीफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उस वक़्त नौ जवान थे, आप ने दरयाफ़्त फ़रमाया कि ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام की च्यूंटी मादा थी या नर ? ह़ज़रते क़तादा साकित हो गए, तो इमाम साह़िब ने फ़रमाया कि वोह मादा थी। आप से दरयाफ़्त किया गया कि येह आप को किस त़रह़ मा'लूम हुवा ? आप ने फ़रमाया : कुरआने करीम में इर्शाद हुवा : ''قَالَتْ نَمْلَةٌ'' । अगर नर होती तो कुरआन शरीफ़ में ''قَالَ نَمْلَةٌ'' वारिद होता। (سُبْحٰنَ اللّٰہ इस से ह़ज़रते इमाम की शाने इल्म मा'लूम होती है) ग़रज़ जब उस च्यूंटियों की मलिका ने ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام के लश्कर को देखा तो कहने लगी : **29 :** येह उस ने इस लिये कहा कि वोह जानती थी कि ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام नबी हैं, साह़िबे अ़द्ल हैं, जब्र और ज़ियादती आप की शान नहीं है। इस लिये अगर आप के लश्कर से च्यूंटियां कुचल जाएंगी तो बे ख़बरी ही में कुचल जाएंगी कि वोह गुज़रते हों और इस त़रफ़ इल्तिफ़ात न करें। च्यूंटी की येह बात ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام ने तीन मील से सुन ली और हवा हर शख़्स का कलाम आप के सम्अ़ मुबारक तक पहुंचाती थी। जब आप च्यूंटियों की वादी पर पहुंचे तो आप ने अपने लश्करों को ठहरने का हुक्म दिया यहां तक कि च्यूंटियां अपने घरों में दाख़िल हो गईं। सैर ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام की अगर्चे हवा पर थी मगर बईद नहीं है कि येह मक़ाम आप का जाए नुज़ूल हो। **30 :** अम्बिया का हंसना तबस्सुम ही होता है जैसा कि अह़ादीस में वारिद हुवा है, वोह ह़ज़रात क़ह़क़ह़ा मार कर नहीं हंसते। **31 :** नुबुव्वत व मुल्क व इल्म अ़ता फ़रमा कर।

www.dawateislami.net

الصّٰلِحِيْنَ ﴿١٩﴾ وَتَفَقَّدَ الطَّيْرَ فَقَالَ مَالِيَ لَآ اَرَى الْهُدْهُدَ ۖ اَمْ كَانَ

सज़ावार हैं[32] और परिन्दों का जाएज़ा लिया तो बोला मुझे क्या हुवा कि मैं हुदहुद को नहीं देखता या वोह

مِنَ الْغَآىِٕبِيْنَ ﴿٢٠﴾ لَاُعَذِّبَنَّهٗ عَذَابًا شَدِيْدًا اَوْ لَاَاْذْبَحَنَّهٗٓ اَوْ لَيَاْتِيَنِّيْ

वाक़ेई हाज़िर नहीं ज़रूर मैं उसे सख़्त अ़ज़ाब करूंगा[33] या ज़ब्ह़ कर दूंगा या कोई रोशन सनद

بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿٢١﴾ فَمَكَثَ غَيْرَ بَعِيْدٍ فَقَالَ اَحَطْتُّ بِمَا لَمْ تُحِطْ بِهٖ وَ

मेरे पास लाए[34] तो हुदहुद कुछ ज़ियादा देर न ठहरा और आ कर[35] अ़र्ज़ की कि मैं वोह बात देख आया हूं जो हुज़ूर ने न देखी और

جِئْتُكَ مِنْ سَبَاٍۭ بِنَبَاٍ يَّقِيْنٍ ﴿٢٢﴾ اِنِّيْ وَجَدْتُّ امْرَاَةً تَمْلِكُهُمْ وَاُوْتِيَتْ

मैं शहरे सबा से हुज़ूर के पास एक यक़ीनी ख़बर लाया हूं मैं ने एक औ़रत देखी[36] कि उन पर बादशाही कर रही है और उसे

مِنْ كُلِّ شَيْءٍ وَّلَهَا عَرْشٌ عَظِيْمٌ ﴿٢٣﴾ وَجَدْتُّهَا وَقَوْمَهَا يَسْجُدُوْنَ

हर चीज़ में से मिला है[37] और उस का बड़ा तख़्त है[38] मैं ने उसे और उस की क़ौम को पाया कि अल्लाह को छोड़ कर

لِلشَّمْسِ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ فَصَدَّهُمْ عَنِ

सूरज को सज्दा करते हैं[39] और शैत़ान ने उन के आ'माल उन की निगाह में संवार कर उन को सीधी राह से

السَّبِيْلِ فَهُمْ لَا يَهْتَدُوْنَ ﴿٢٤﴾ اَلَّا يَسْجُدُوْا لِلّٰهِ الَّذِيْ يُخْرِجُ الْخَبْءَ

रोक दिया[40] तो वोह राह नहीं पाते क्यूं नहीं सज्दा करते अल्लाह को जो निकालता है

فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تُخْفُوْنَ وَمَا تُعْلِنُوْنَ ﴿٢٥﴾ اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ

आस्मानों और ज़मीन की छुपी चीज़ें[41] और जानता है जो कुछ तुम छुपाते हो और ज़ाहिर करते हो[42] अल्लाह है कि उस के सिवा कोई

اِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ﴿٢٦﴾ السجدة قَالَ سَنَنْظُرُ اَصَدَقْتَ اَمْ كُنْتَ مِنَ

सच्चा मा'बूद नहीं वोह बड़े अ़र्श का मालिक है सुलैमान ने फ़रमाया अब हम देखेंगे कि तू ने सच कहा या तू

السجدة ٨

32 : ह़ज़राते अम्बिया व औलिया **33 :** उस के पर उखाड़ कर या उस को उस के प्यारों से जुदा कर के या उस को उस के अक़्रान का ख़ादिम बना कर या उस को ग़ैर जानवरों के साथ क़ैद कर के। और हुदहुद को ह़स्बे मस्लह़त अ़ज़ाब करना आप के लिये ह़लाल था और जब परिन्द आप के लिये मुसख़्ख़र (ताबेअ़) किये गए थे तो तादीब व सियासत मुक़्तज़ाए तस्ख़ीर है। **34 :** जिस से उस की मा'ज़ूरी ज़ाहिर हो। **35 :** निहायत इ़ज्ज़ व इन्किसार और अदब व तवाज़ोअ़ के साथ मुआ़फ़ी चाह कर **36 :** जिस का नाम बिल्क़ीस है **37 :** जो बादशाहों के लिये शायान होता है **38 :** जिस का तूल अस्सी गज़, अ़र्ज़ चालीस गज़, सोने चांदी का जवाहिरात के साथ मुरस्सअ़ (जड़ा हुवा) **39 :** क्यूं कि वोह लोग आफ़्ताब परस्त मजूसी थे। **40 :** सीधी राह से मुराद त़रीक़े ह़क़ व दीने इस्लाम है। **41 :** आस्मान की छुपी चीज़ों से मींह और ज़मीन की छुपी चीज़ों से नबातात मुराद हैं। **42 :** इस में आफ़्ताब परस्तों बल्कि तमाम बात़िल परस्तों का रद है जो अल्लाह तआ़ला के सिवा किसी को भी पूजें। मक़्सूद येह है कि इ़बादत का मुस्तह़िक़ सिर्फ़ वोही है जो काएनाते अर्ज़ी व समावी पर क़ुदरत रखता हो और जमीअ़ मा'लूमात का आ़लिम हो, जो ऐसा नहीं वोह किसी त़रह़ मुस्तह़िक़े इ़बादत नहीं।

www.dawateislami.net

الْكٰذِبِيْنَ ﴿٢٧﴾ اِذْهَبْ بِّكِتٰبِيْ هٰذَا فَاَلْقِهْ اِلَيْهِمْ ثُمَّ تَوَلَّ عَنْهُمْ فَانْظُرْ

झूटों में है[43] मेरा येह फ़रमान ले जा कर उन पर डाल फिर उन से अलग हट कर देख

مَاذَا يَرْجِعُوْنَ ﴿٢٨﴾ قَالَتْ يٰۤاَيُّهَا الْمَلَؤُا اِنِّيْۤ اُلْقِيَ اِلَيَّ كِتٰبٌ كَرِيْمٌ ﴿٢٩﴾

कि वोह क्या जवाब देते हैं[44] वोह औ़रत बोली ऐ सरदारो बेशक मेरी त़रफ़ एक इ़ज़्ज़त वाला ख़त़ डाला गया[45]

اِنَّهٗ مِنْ سُلَيْمٰنَ وَاِنَّهٗ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ﴿٣٠﴾ اَلَّا تَعْلُوْا عَلَيَّ

बेशक वोह सुलैमान की त़रफ़ से है और बेशक वोह अल्लाह के नाम से है जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला येह कि मुझ पर बुलन्दी न चाहो[46]

ع ٢ ١٧ ١٧ وَاْتُوْنِيْ مُسْلِمِيْنَ ﴿٣١﴾ قَالَتْ يٰۤاَيُّهَا الْمَلَؤُا اَفْتُوْنِيْ فِيْۤ اَمْرِيْ ۚ مَا كُنْتُ

और गरदन रखते मेरे हुज़ूर ह़ाज़िर हो[47] बोली ऐ सरदारो मेरे इस मुआ़मले में मुझे राय दो मैं किसी मुआ़मले में

قَاطِعَةً اَمْرًا حَتّٰى تَشْهَدُوْنِ ﴿٣٢﴾ قَالُوْا نَحْنُ اُولُوْا قُوَّةٍ وَّاُولُوْا بَاْسٍ

कोई क़त़्ई फ़ैसला नहीं करती जब तक तुम मेरे पास ह़ाज़िर न हो वोह बोले हम ज़ोर वाले और बड़ी सख़्त लड़ाई

شَدِيْدٍ ۙ وَّالْاَمْرُ اِلَيْكِ فَانْظُرِيْ مَاذَا تَاْمُرِيْنَ ﴿٣٣﴾ قَالَتْ اِنَّ الْمُلُوْكَ

वाले हैं[48] और इख़्तियार तेरा है तू नज़र कर कि क्या हुक्म देती है[49] बोली बेशक जब बादशाह

اِذَا دَخَلُوْا قَرْيَةً اَفْسَدُوْهَا وَجَعَلُوْۤا اَعِزَّةَ اَهْلِهَاۤ اَذِلَّةً ۚ وَكَذٰلِكَ

किसी बस्ती में[50] दाख़िल होते हैं उसे तबाह कर देते हैं और उस के इ़ज़्ज़त वालों को[51] ज़लील और ऐसा ही

يَفْعَلُوْنَ ﴿٣٤﴾ وَاِنِّيْ مُرْسِلَةٌ اِلَيْهِمْ بِهَدِيَّةٍ فَنٰظِرَةٌۢ بِمَ يَرْجِعُ

करते हैं[52] और मैं उन की त़रफ़ एक तोह़फ़ा भेजने वाली हूं फिर देखूंगी कि एलची क्या जवाब

43 : फिर ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام ने एक मक्तूब लिखा जिस का मज़्मून येह था कि अज़् जानिब बन्दए ख़ुदा सुलैमान बिन दावूद ब सूए बिल्क़ीस मलिकए शहरे सबा। بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ उस पर सलाम जो हिदायत क़बूल करे, इस के बा'द मुद्दआ़ येह कि तुम मुझ पर बुलन्दी न चाहो और मेरे हुज़ूर मुत़ीअ़ हो कर ह़ाज़िर हो। उस पर आप ने अपनी मोहर लगाई और हुदहुद से फ़रमाया **44 :** चुनान्चे हुदहुद वोह मक्तूबे गिरामी ले कर बिल्क़ीस के पास पहुंचा, उस वक़्त बिल्क़ीस के गिर्द उस के आ'यान व वुज़रा का मज्मअ़ था। हुदहुद ने वोह मक्तूब बिल्क़ीस की गोद में डाल दिया और वोह उस को देख कर ख़ौफ़ से लरज़ गई और फिर उस पर मोहर देख कर **45 :** उस ने उस ख़त़ को इ़ज़्ज़त वाला या इस लिये कहा कि उस पर मोहर लगी हुई थी, इस से उस ने जाना कि किताब का भेजने वाला जलीलुल मन्ज़िलत बादशाह है या उस मक्तूब की इब्तिदा अल्लाह तआ़ला के नामे पाक से थी। फिर उस ने बताया कि वोह मक्तूब किस की त़रफ़ से आया है। चुनान्चे कहा : **46 :** या'नी मेरी ता'मीले इर्शाद करो और तकब्बुर न करो जैसा कि बा'ज़ बादशाह किया करते हैं। **47 :** फ़रमां बरदाराना शान से। मक्तूब का येह मज़्मून सुना कर बिल्क़ीस अपने आ'याने दौलत की त़रफ़ मुतवज्जेह हुई। **48 :** इस से उन की मुराद येह थी कि अगर तेरी राय जंग की हो तो हम लोग इस के लिये तय्यार हैं बहादुर और शुजाअ़ हैं, साह़िबे क़ुव्वत व तुवानाई हैं, कसीर फ़ौजें रखते हैं, जंग आज़्मा हैं। **49 :** ऐ मलिका ! हम तेरी इत़ाअ़त करेंगे तेरे हुक्म के मुन्तज़िर हैं। इस जवाब में उन्हों ने येह इशारा किया कि उन की राय जंग की है या उन का मुद्दआ़ येह हो कि हम जंगी लोग हैं राय और मश्वरा हमारा काम नहीं तू ख़ुद साह़िबे अ़क़्ल व तदबीर है हम बहर ह़ाल तेरा इत्तिबाअ़ करेंगे। जब बिल्क़ीस ने देखा कि येह लोग जंग की त़रफ़ माइल हैं तो इस ने उन्हें उन की राय की ख़त़ा पर आगाह किया और जंग के नताइज सामने किये। **50 :** अपने ज़ोरो क़ुव्वत से **51 :** क़त्ल और

www.dawateislami.net

الْمُرْسَلُوْنَ ﴿٣٥﴾ فَلَمَّا جَآءَ سُلَيْمٰنَ قَالَ اَتُمِدُّوْنَنِ بِمَالٍ ۫ فَمَآ اٰتٰىنِۦَ اللّٰهُ

ले कर पलटे[53] फिर जब वोह[54] सुलैमान के पास आया सुलैमान ने फ़रमाया क्या माल से मेरी मदद करते हो तो जो मुझे अल्लाह ने दिया[55]

خَيْرٌ مِّمَّآ اٰتٰىكُمْ ۚ بَلْ اَنْتُمْ بِهَدِيَّتِكُمْ تَفْرَحُوْنَ ﴿٣٦﴾ اِرْجِعْ اِلَيْهِمْ

वोह बेहतर है उस से जो तुम्हें दिया[56] बल्कि तुम ही अपने तोहफ़े पर ख़ुश होते हो[57] पलट जा उन की तरफ़

فَلَنَاْتِيَنَّهُمْ بِجُنُوْدٍ لَّا قِبَلَ لَهُمْ بِهَا وَلَنُخْرِجَنَّهُمْ مِّنْهَآ اَذِلَّةً وَّهُمْ

तो ज़रूर हम उन पर वोह लश्कर लाएंगे जिन की उन्हें ताक़त न होगी और ज़रूर हम उन को उस शहर से ज़लील कर के निकाल देंगे यूं कि वोह

صٰغِرُوْنَ ﴿٣٧﴾ قَالَ يٰٓاَيُّهَا الْمَلَؤُا اَيُّكُمْ يَاْتِيْنِيْ بِعَرْشِهَا قَبْلَ اَنْ

पस्त होंगे[58] सुलैमान ने फ़रमाया ऐ दरबारियो तुम में कौन है कि वोह उस का तख़्त मेरे पास ले आए क़ब्ल इस के कि

يَّاْتُوْنِيْ مُسْلِمِيْنَ ﴿٣٨﴾ قَالَ عِفْرِيْتٌ مِّنَ الْجِنِّ اَنَا اٰتِيْكَ بِهٖ قَبْلَ اَنْ

वोह मेरे हुज़ूर मुतीअ हो कर हाज़िर हों[59] एक बड़ा ख़बीस जिन्न बोला कि वोह तख़्त हुज़ूर में हाज़िर कर दूंगा क़ब्ल इस के कि

تَقُوْمَ مِنْ مَّقَامِكَ ۚ وَاِنِّيْ عَلَيْهِ لَقَوِيٌّ اَمِيْنٌ ﴿٣٩﴾ قَالَ الَّذِيْ عِنْدَهٗ

हुज़ूर इज्लास बरख़ास्त करें[60] और मैं बेशक इस पर क़ुव्वत वाला अमानत दार हूं[61] उस ने अर्ज़ की जिस के पास

क़ैद और इहानत के साथ **52 :** येही बादशाहों का तरीक़ा है। बादशाहों की आदत का जो उस को इल्म था उस की बिना पर उस ने येह कहा और मुराद उस की येह थी कि जंग मुनासिब नहीं है इस में मुल्क और अहले मुल्क की तबाही व बरबादी का ख़तरा है। इस के बा'द उस ने अपनी राय का इज़्हार किया और कहा **53 :** इस से मा'लूम हो जाएगा कि वोह बादशाह हैं या नबी क्यूं कि बादशाह इज़्ज़तो एहतिराम के साथ हदिय्या क़बूल करते हैं, अगर वोह बादशाह हैं तो हदिय्या क़बूल कर लेंगे और अगर नबी हैं तो हदिय्या क़बूल न करेंगे और सिवा इस के कि हम उन के दीन का इत्तिबाअ करें वोह और किसी बात से राज़ी न होंगे। तो इस ने पांच सो ग़ुलाम और पांच सो बांदियां बेहतरीन लिबास और ज़ेवरों के साथ आरास्ता कर के ज़र निगार ज़ीनों पर सुवार कर के भेजे और पांच सो ईंटें सोने की और जवाहिर से मुरस्सअ ताज और मुश्को अम्बर वग़ैरा मअ एक ख़त के अपने क़ासिद के साथ रवाना किये। हुदहुद येह देख कर चल दिया और उस ने हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام के पास सब ख़बर पहुंचाई, आप ने हुक्म दिया कि सोने चांदी की ईंटें बना कर नव फ़रसंग के मैदान में बिछा दी जाएं और उस के गिर्द सोने चांदी से इहाते की बुलन्द दीवार बना दी जाए और बरों बहर के ख़ूब सूरत जानवर और जिन्नात के बच्चे मैदान के दाएं बाएं हाज़िर किये जाएं। **54 :** या'नी बिल्क़ीस का पयामी मअ अपनी जमाअत के हदिय्या ले कर **55 :** या'नी दीन और नुबुव्वत और हिक्मत व मुल्क **56 :** माल व अस्बाबे दुन्या **57 :** या'नी तुम अहले मुफ़ाख़रत (मग़रूर) हो ज़ख़ारिफ़े दुन्या (दुन्या की ज़ीनतों) पर फ़ख़्र करते हो और एक दूसरे के हदिय्ये पर ख़ुश होते हो, मुझे न दुन्या से ख़ुशी होती है न इस की हाजत, अल्लाह तआला ने मुझे इतना कसीर अता फ़रमाया कि औरों को न दिया, बा वुजूद इस के दीन और नुबुव्वत से मुझ को मुशर्रफ़ किया। इस के बा'द हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام ने वफ़्द के अमीर मुन्ज़िर बिन अम्र से फ़रमाया कि येह हदिय्ये ले कर **58 :** या'नी अगर वोह मेरे पास मुसल्मान हो कर हाज़िर न हुए तो येह अन्जाम होगा। जब क़ासिद हदिय्ये ले कर बिल्क़ीस के पास वापस गए और तमाम वाक़िआत सुनाए तो उस ने कहा बेशक वोह नबी हैं और हमें उन से मुक़ाबले की ताक़त नहीं और उस ने अपना तख़्त अपने सात महलों में से सब से पिछले महल में महफ़ूज़ कर के तमाम दरवाज़े मुक़फ़्फ़ल कर दिये और उन पर पहरेदार मुक़र्रर कर दिये और हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام की ख़िदमत में हाज़िर होने का इन्तिज़ाम किया ताकि देखे कि आप उस को क्या हुक्म फ़रमाते हैं और वोह एक लश्कर गिरां ले कर आप की तरफ़ रवाना हुई, जिस में बारह हज़ार नवाब थे और हर नवाब के साथ हज़ारों लश्करी। जब इतने क़रीब पहुंच गई कि हज़रत से सिर्फ़ एक फ़रसंग का फ़ासिला रह गया **59 :** इस से आप का मुद्आ येह था कि उस का तख़्त हाज़िर कर के उस को अल्लाह तआला की क़ुदरत और अपनी नुबुव्वत पर दलालत करने वाला मो'जिज़ा दिखावें। बा'ज़ों ने कहा है कि आप ने चाहा कि उस के आने से क़ब्ल उस की वज़्अ बदल दें और उस से उस की अक़्ल का इम्तिहान फ़रमाएं कि पहचान सकती है या नहीं। **60 :** और आप का इज्लास सुब्ह से दोपहर तक होता था। **61 :** हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया : मैं इस से जल्द चाहता हूं।

www.dawateislami.net

عِلْمٌ مِّنَ الْكِتٰبِ اَنَا اٰتِيْكَ بِهٖ قَبْلَ اَنْ يَّرْتَدَّ اِلَيْكَ طَرْفُكَ ؕ فَلَمَّا

किताब का इल्म था[62] कि मैं उसे हुज़ूर में हाज़िर कर दूंगा एक पल मारने से पहले[63] फिर जब

رَاٰهُ مُسْتَقِرًّا عِنْدَهٗ قَالَ هٰذَا مِنْ فَضْلِ رَبِّيْ ۖ لِيَبْلُوَنِيْٓ ءَاَشْكُرُ

सुलैमान ने उस तख़्त को अपने पास रखा देखा कहा येह मेरे रब के फ़ज़्ल से है ताकि मुझे आज़्माए कि मैं शुक्र करता हूं

اَمْ اَكْفُرُ ؕ وَمَنْ شَكَرَ فَاِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ كَفَرَ فَاِنَّ رَبِّيْ غَنِيٌّ

या नाशुक्री और जो शुक्र करे तो वोह अपने भले को शुक्र करता है[64] और जो नाशुक्री करे तो मेरा रब बे परवाह है

كَرِيْمٌ ﴿٤٠﴾ قَالَ نَكِّرُوْا لَهَا عَرْشَهَا نَنْظُرْ اَتَهْتَدِيْٓ اَمْ تَكُوْنُ مِنَ

सब ख़ूबियों वाला सुलैमान ने हुक्म दिया औरत का तख़्त उस के सामने वज़्अ़ बदल कर बेगाना कर दो कि हम देखें कि वोह राह पाती है या उन में

الَّذِيْنَ لَا يَهْتَدُوْنَ ﴿٤١﴾ فَلَمَّا جَآءَتْ قِيْلَ اَهٰكَذَا عَرْشُكِ ؕ قَالَتْ

होती है जो ना वाक़िफ़ रहे फिर जब वोह आई उस से कहा गया क्या तेरा तख़्त ऐसा ही है बोली

كَاَنَّهٗ هُوَ ۚ وَاُوْتِيْنَا الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهَا وَكُنَّا مُسْلِمِيْنَ ﴿٤٢﴾ وَصَدَّهَا مَا

गोया येह वोही है[65] और हम को इस वाक़िए़ से पहले ख़बर मिल चुकी[66] और हम फ़रमां बरदार हुए[67] और उसे रोका[68] उस

كَانَتْ تَّعْبُدُ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ اِنَّهَا كَانَتْ مِنْ قَوْمٍ كٰفِرِيْنَ ﴿٤٣﴾ قِيْلَ

चीज़ ने जिसे वोह अल्लाह के सिवा पूजती थी बेशक वोह काफ़िर लोगों में से थी उस से कहा

لَهَا ادْخُلِي الصَّرْحَ ۚ فَلَمَّا رَاَتْهُ حَسِبَتْهُ لُجَّةً وَّكَشَفَتْ عَنْ سَاقَيْهَا ؕ

गया सहन में आ[69] फिर जब उस ने उसे देखा उसे गहरा पानी समझी और अपनी साक़ें (पिंडलियां) खोलीं[70]

قَالَ اِنَّهٗ صَرْحٌ مُّمَرَّدٌ مِّنْ قَوَارِيْرَ ؕ قَالَتْ رَبِّ اِنِّيْ ظَلَمْتُ نَفْسِيْ وَ

सुलैमान ने फ़रमाया येह तो एक चिक्ना सहन है शीशों जड़ा[71] औरत ने अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब मैं ने अपनी जान पर ज़ुल्म किया[72] और

62 : या'नी आप के वज़ीर आसफ़ बिन बरख़िया जो अल्लाह तआ़ला का इस्मे आ'ज़म जानते थे। **63 :** हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया : लाओ हाज़िर करो। आसफ़ ने अ़र्ज़ किया : आप नबी इब्ने नबी हैं और जो रुत्बा बारगाहे इलाही में आप को हासिल है यहां किस को मुयस्सर है, आप दुआ़ करें तो वोह आप के पास ही होगा। आप ने फ़रमाया : तुम सच कहते हो और दुआ़ की उसी वक़्त तख़्त ज़मीन के नीचे नीचे चल कर हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام की कुरसी के क़रीब नुमूदार हुवा। **64 :** कि इस शुक्र का नफ़्अ़ ख़ुद उस शुक्र गुज़ार की त़रफ़ आइद होता है। **65 :** इस जवाब से उस का कमाले अ़क़्ल मा'लूम हुवा। अब उस से कहा गया कि येह तेरा ही तख़्त है दरवाज़ा बन्द करने क़ुफ़्ल लगाने पहरेदार मुक़र्रर करने से क्या फ़ाएदा हुवा ? इस पर उस ने कहा **66 :** अल्लाह तआ़ला की क़ुदरत और आप की सिह़्ह़ते नुबुव्वत की, हुदहुद के वाक़िए़ से और अमीरे वफ़्द से **67 :** हम ने आप की इताअ़त और आप की फ़रमां बरदारी इख़्तियार की **68 :** अल्लाह की इ़बादत व तौह़ीद से या इस्लाम की त़रफ़ तक़द्दुम से **69 :** वोह सहन शफ़्फ़ाफ़ आबगीने का था, उस के नीचे आब जारी था, उस में मछलियां थीं और उस के वस्त में हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام का तख़्त था जिस पर आप जल्वा अफ़रोज़ थे। **70 :** ताकि पानी में चल कर हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام की ख़िदमत में हाज़िर हो। **71 :** येह पानी नहीं है। येह सुन कर बिल्क़ीस ने अपनी साक़ें (पिंडलियां) छुपा लीं और इस

www.dawateislami.net

اَسْلَمْتُ مَعَ سُلَيْمٰنَ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٤٤﴾ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَاۤ اِلٰى ثَمُوْدَ ع ٣ ١٣ ١٨

अब सुलैमान के साथ अल्लाह के हुज़ूर गरदन रखती हूं जो रब सारे जहान का[73] और बेशक हम ने समूद की तरफ़

اَخَاهُمْ صٰلِحًا اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ فَاِذَا هُمْ فَرِيْقٰنِ يَخْتَصِمُوْنَ ﴿٤٥﴾ قَالَ

उन के हमक़ौम सालेह को भेजा कि अल्लाह को पूजो[74] तो जभी वोह दो गुरौह हो गए[75] झगड़ा करते[76] सालेह ने फ़रमाया

يٰقَوْمِ لِمَ تَسْتَعْجِلُوْنَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ الْحَسَنَةِ ۚ لَوْلَا تَسْتَغْفِرُوْنَ اللّٰهَ

ऐ मेरी क़ौम क्यूं बुराई की जल्दी करते हो[77] भलाई से पहले[78] अल्लाह से बख़्शिश क्यूं नहीं मांगते[79]

لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿٤٦﴾ قَالُوا اطَّيَّرْنَا بِكَ وَبِمَنْ مَّعَكَ ؕ قَالَ طٰٓئِرُكُمْ

शायद तुम पर रहम हो[80] बोले हम ने बुरा शुगून लिया तुम से और तुम्हारे साथियों से[81] फ़रमाया तुम्हारी बद शुगूनी

عِنْدَ اللّٰهِ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ تُفْتَنُوْنَ ﴿٤٧﴾ وَكَانَ فِى الْمَدِيْنَةِ تِسْعَةُ رَهْطٍ

अल्लाह के पास है[82] बल्कि तुम लोग फ़ितने में पड़े हो[83] और शहर में नव शख़्स थे[84]

يُّفْسِدُوْنَ فِى الْاَرْضِ وَلَا يُصْلِحُوْنَ ﴿٤٨﴾ قَالُوْا تَقَاسَمُوْا بِاللّٰهِ

कि ज़मीन में फ़साद करते और संवार न चाहते आपस में अल्लाह की क़समें खा कर बोले हम ज़रूर

لَنُبَيِّتَنَّهٗ وَاَهْلَهٗ ثُمَّ لَنَقُوْلَنَّ لِوَلِيِّهٖ مَا شَهِدْنَا مَهْلِكَ اَهْلِهٖ وَاِنَّا

रात को छापा मारेंगे सालेह और उस के घर वालों पर[85] फिर उस के वारिस से[86] कहेंगे उस घर वालों के क़त्ल के वक़्त हम हाज़िर न थे और बेशक हम

से उस को बहुत तअ़ज्जुब हुवा और उस ने यक़ीन किया कि हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام का मुल्क व हुकूमत अल्लाह की तरफ़ से है और इन अ़जाइबात से उस ने अल्लाह तआ़ला की तौहीद और आप की नुबुव्वत पर इस्तिद्लाल किया। अब हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام ने उस को इस्लाम की दा'वत दी। **72 :** कि तेरे ग़ैर को पूजा आफ़्ताब की परस्तिश की **73 :** चुनान्चे उस ने इख़्लास के साथ तौहीद व इस्लाम को क़बूल किया और ख़ालिस अल्लाह तआ़ला की इबादत इख़्तियार की। **74 :** और किसी को उस का शरीक न करो **75 :** एक मोमिन और एक काफ़िर **76 :** हर फ़रीक़ अपने ही को हक़ पर कहता और दोनों बाहम झगड़ते। काफ़िर गुरौह ने कहा : ऐ सालेह ! जिस अ़ज़ाब का तुम वा'दा देते हो उस को लाओ अगर रसूलों में से हो। **77 :** या'नी बला व अ़ज़ाब की **78 :** भलाई से मुराद आफ़िय्यत व रहमत है। **79 :** अ़ज़ाब नाज़िल होने से पहले, कुफ़्र से तौबा कर के, ईमान ला कर **80 :** और दुन्या में अ़ज़ाब न किया जाए। **81 :** हज़रते सालेह عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام जब मब्ऊ़स हुए और क़ौम ने तक्ज़ीब की इस के बाइ़स बारिश रुक गई, क़हत हो गया, लोग भूके मरने लगे, इस को उन्हों ने हज़रते सालेह عَلَيْهِ السَّلَام की तशरीफ़ आवरी की तरफ़ निस्बत किया और आप की आमद को बद शुगूनी समझा। **82 :** हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि बद शुगूनी जो तुम्हारे पास आई येह तुम्हारे कुफ़्र के सबब अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से आई। **83 :** आज़्माइश में डाले गए या अपने दीन के बाइ़स अ़ज़ाब में मुब्तला हो। **84 :** या'नी समूद के शहर में जिस का नाम हिज्र है, उन के शरीफ़ ज़ादों में से नव शख़्स थे जिन का सरदार क़ुदार बिन सालिफ़ था, येही लोग हैं जिन्हों ने नाक़ा (ऊंटनी) की कूंचें काटने में सई की थी। **85 :** या'नी रात के वक़्त उन को और उन की औलाद को और उन के मुत्तबिईन को जो उन पर ईमान लाए हैं क़त्ल कर देंगे। **86 :** जिस को उन के ख़ून का बदला तलब करने का हक़ होगा।

www.dawateislami.net

لَصٰدِقُوْنَ ﴿۴۹﴾ وَ مَكَرُوْا مَكْرًا وَّ مَكَرْنَا مَكْرًا وَّ هُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿۵۰﴾ فَانْظُرْ

सच्चे हैं और उन्हों ने अपना सा मक्र किया और हम ने अपनी खुफ़्या तदबीर फ़रमाई[87] और वोह ग़ाफ़िल रहे तो देखो

كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ مَكْرِهِمْ ۙ اَنَّا دَمَّرْنٰهُمْ وَ قَوْمَهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿۵۱﴾ فَتِلْكَ

कैसा अन्जाम हुवा उन के मक्र का हम ने हलाक कर दिया उन्हें[88] और उन की सारी क़ौम को[89] तो येह हैं

بُيُوْتُهُمْ خَاوِيَةًۢ بِمَا ظَلَمُوْا ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿۵۲﴾ وَ

उन के घर ढए पड़े बदला उन के ज़ुल्म का बेशक इस में निशानी है जानने वालों के लिये और

اَنْجَيْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ كَانُوْا يَتَّقُوْنَ ﴿۵۳﴾ وَ لُوْطًا اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖۤ

हम ने उन को बचा लिया जो ईमान लाए[90] और डरते थे[91] और लूत़ को जब उस ने अपनी क़ौम से कहा

اَتَاْتُوْنَ الْفَاحِشَةَ وَ اَنْتُمْ تُبْصِرُوْنَ ﴿۵۴﴾ اَئِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ الرِّجَالَ شَهْوَةً

क्या बे ह़याई पर आते हो[92] और तुम सूझ रहे हो[93] क्या तुम मर्दों के पास मस्ती से जाते हो

مِّنْ دُوْنِ النِّسَآءِ ؕ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُوْنَ ﴿۵۵﴾ فَمَا كَانَ جَوَابَ

औरतें छोड़ कर[94] बल्कि तुम जाहिल लोग हो[95] तो उस की क़ौम का कुछ जवाब

قَوْمِهٖۤ اِلَّاۤ اَنْ قَالُوْۤا اَخْرِجُوْۤا اٰلَ لُوْطٍ مِّنْ قَرْيَتِكُمْ ۚ اِنَّهُمْ اُنَاسٌ

न था मगर येह कि बोले लूत़ के घराने को अपनी बस्ती से निकाल दो येह लोग तो

يَّتَطَهَّرُوْنَ ﴿۵۶﴾ فَاَنْجَيْنٰهُ وَ اَهْلَهٗۤ اِلَّا امْرَاَتَهٗ ۫ قَدَّرْنٰهَا مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ﴿۵۷﴾

सुथरा पन चाहते हैं[96] तो हम ने उसे और उस के घर वालों को नजात दी मगर उस की औरत को हम ने ठहरा दिया था कि वोह रह जाने वालों में है[97]

87 : या'नी उन के मक्र की जज़ा येह दी कि उन के अ़ज़ाब में जल्दी फ़रमाई **88 :** या'नी उन नव शख़्सों को । ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ تعالٰی عنہما ने फ़रमाया कि **अल्लाह** तआ़ला ने उस शब ह़ज़रते सालेह़ علیہ السلام के मकान की ह़िफ़ाज़त के लिये फ़िरिश्ते भेजे तो वोह नव शख़्स हथियार बांध कर तलवारें खींच कर ह़ज़रते सालेह़ علیہ السلام के दरवाज़े पर आए, फ़िरिश्तों ने उन को पथ्थर मारे, वोह पथ्थर लगते थे और मारने वाले नज़र न आते थे, इस त़रह़ उन नव को हलाक किया । **89 :** होलनाक आवाज़ से । **90 :** ह़ज़रते सालेह़ علیہ السلام पर **91 :** उन की ना फ़रमानी से, उन लोगों की ता'दाद चार हज़ार थी । **92 :** इस बे ह़याई से मुराद उन की बदकारी है । **93 :** या'नी इस फ़े'ल की क़बाह़त जानते हो या येह मा'ना हैं कि एक दूसरे के सामने बे पर्दा बिल ए'लान बद फ़े'ली का इरतिकाब करते हो या येह कि तुम अपने से पहले ना फ़रमानी करने वालों की तबाही और उन के अ़ज़ाब के आसार देखते हो फिर भी इस बद आ'माली में मुब्तला हो । **94 :** बा वुजूदे कि मर्दों के लिये औरतें बनाई गई हैं, मर्दों के लिये मर्द और औरतों के लिये औरतें नहीं बनाई गईं, लिहाज़ा येह फ़े'ल ह़िक्मते इलाही की मुख़ालफ़त है । **95 :** जो ऐसा फ़े'ल करते हो **96 :** और इस गन्दे काम को मन्अ़ करते हैं । **97 :** अ़ज़ाब में ।

www.dawateislami.net

وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَّطَرًا ۚ فَسَآءَ مَطَرُ الْمُنْذَرِيْنَ ﴿۵۸﴾ قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ ع ۴ ۱۴ ۱۹

और हम ने उन पर एक बरसाव बरसाया[98] तो क्या ही बुरा बरसाव था डराए हुओं का तुम कहो सब ख़ूबियां अल्लाह को[99]

وَسَلٰمٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى ؕ آٰللّٰهُ خَيْرٌ اَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿۵۹﴾

और सलाम उस के चुने हुए बन्दों पर[100] क्या अल्लाह बेहतर[101] या उन के साख़्ता (मन घड़त) शरीक[102]

98 : पथ्थरों का। 99 : येह ख़िताब है सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को कि पिछली उम्मतों के हलाक पर अल्लाह तआ़ला की ह़म्द बजा लाएं। 100 : या'नी अम्बिया व मुर्सलीन पर। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि चुने हुए बन्दों से हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के अस्ह़ाब मुराद हैं। 101 : ख़ुदा परस्तों के लिये जो ख़ास उस की इ़बादत करें और उस पर ईमान लाएं और वोह उन्हें अ़ज़ाब व हलाक से बचाए। 102 : या'नी बुत जो अपने परस्तारों के कुछ काम न आ सकें, तो जब उन में कोई भलाई नहीं वोह कोई नफ़्अ़ नहीं पहुंचा सकते तो उन को पूजना और मा'बूद मानना निहायत बेजा है। इस के बा'द चन्द अन्वाअ़ ज़िक्र फ़रमाए जाते हैं जो अल्लाह तआ़ला की वह़दानिय्यत और उस के कमाले क़ुदरत पर दलालत करते हैं।

www.dawateislami.net

اَمَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَاَنْزَلَ لَكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ مَآءً ۚ

या वोह जिस ने आस्मान और ज़मीन बनाए[103] और तुम्हारे लिये आस्मान से पानी उतारा

فَاَنْۢبَتْنَا بِهٖ حَدَآئِقَ ذَاتَ بَهْجَةٍ ۚ مَا كَانَ لَكُمْ اَنْ تُنْۢبِتُوْا

तो हम ने उस से बाग़ उगाए रौनक़ वाले तुम्हारी ताक़त न थी कि उन के पेड़

شَجَرَهَا ؕ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ؕ بَلْ هُمْ قَوْمٌ يَّعْدِلُوْنَ ﴿٦٠﴾ ؕ اَمَّنْ جَعَلَ

उगाते[104] क्या अल्लाह के साथ कोई और ख़ुदा है[105] बल्कि वोह लोग राह से कतराते हैं[106] या वोह जिस ने

الْاَرْضَ قَرَارًا وَّجَعَلَ خِلٰلَهَاۤ اَنْهٰرًا وَّجَعَلَ لَهَا رَوَاسِيَ وَجَعَلَ

ज़मीन बसने को बनाई और उस के बीच में नहरें निकालीं और उस के लिये लंगर बनाए[107] और दोनों

بَيْنَ الْبَحْرَيْنِ حَاجِزًا ؕ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٦١﴾ ؕ

समुन्दरों में आड़ रखी[108] क्या अल्लाह के साथ कोई और ख़ुदा है बल्कि उन में अक्सर जाहिल हैं[109]

اَمَّنْ يُّجِيْبُ الْمُضْطَرَّ اِذَا دَعَاهُ وَيَكْشِفُ السُّوْٓءَ وَيَجْعَلُكُمْ خُلَفَآءَ

या वोह जो लाचार की सुनता है[110] जब उसे पुकारे और दूर कर देता है बुराई और तुम्हें ज़मीन के

الْاَرْضِ ؕ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ؕ قَلِيْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٦٢﴾ ؕ اَمَّنْ يَّهْدِيْكُمْ

वारिस करता है[111] क्या अल्लाह के साथ और ख़ुदा है बहुत ही कम ध्यान करते हो या वोह जो तुम्हें राह

فِيْ ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَمَنْ يُّرْسِلُ الرِّيٰحَ بُشْرًۢا بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهٖ ؕ

दिखाता है[112] ख़ुश्की और तरी की अंधेरियों में[113] और वोह कि हवाएं भेजता है अपनी रहमत के आगे ख़ुश ख़बरी सुनाती[114]

ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ؕ تَعٰلَى اللّٰهُ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٦٣﴾ ؕ اَمَّنْ يَّبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ

क्या अल्लाह के साथ कोई और ख़ुदा है बरतर है अल्लाह उन के शिर्क से या वोह जो ख़ल्क़ की इब्तिदा फ़रमाता है फिर उसे

103 : अज़ीम तरीन अश्या जो मुशाहदे में आती हैं और अल्लाह तआ़ला की क़ुदरते अज़ीमा पर दलालत करती हैं उन का ज़िक्र फ़रमाया। मा'ना येह हैं कि क्या बुत बेहतर हैं या वोह जिस ने आस्मान और ज़मीन जैसी अज़ीम और अजीब मख़्लूक़ बनाई। **104 :** येह तुम्हारी क़ुदरत में न था। **105 :** क्या येह दलाइले क़ुदरत देख कर ऐसा कहा जा सकता है ? हरगिज़ नहीं, वोह वाहिद है, उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं। **106 :** जो उस के लिये शरीक ठहराते हैं। **107 :** वज़्नी पहाड़ जो उसे जुम्बिश से रोकते हैं। **108 :** कि खारी मीठे मिलने न पाएं। **109 :** जो अपने रब की तौहीद और उस के क़ुदरत व इख़्तियार को नहीं जानते और उस पर ईमान नहीं लाते। **110 :** और हाजत रवाई फ़रमाता है। **111 :** कि तुम इस में सुकूनत करो और क़रनन बअ़-द क़रनिन इस में मुतसर्रिफ़ रहो। **112 :** तुम्हारे मनाज़िल व मक़ासिद की **113 :** सितारों से और अ़लामतों से। **114 :** रहमत से मुराद यहां बारिश है।

www.dawateislami.net

يُعِيْدُهٗ وَمَنْ يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ ؕ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ؕ قُلْ

दोबारा बनाएगा[115] और वोह जो तुम्हें आस्मानों और ज़मीन से रोज़ी देता है[116] क्या अल्लाह के साथ कोई और ख़ुदा है तुम फ़रमाओ

هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٦٤﴾ قُلْ لَّا يَعْلَمُ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَ

कि अपनी दलील लाओ अगर तुम सच्चे हो[117] तुम फ़रमाओ ख़ुद गै़ब नहीं जानते जो कोई आस्मानों और

الْاَرْضِ الْغَيْبَ اِلَّا اللّٰهُ ؕ وَمَا يَشْعُرُوْنَ اَيَّانَ يُبْعَثُوْنَ ﴿٦٥﴾ بَلِ

ज़मीन में हैं मगर अल्लाह[118] और उन्हें ख़बर नहीं कि कब उठाए जाएंगे क्या

ادّٰرَكَ عِلْمُهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ ۫ بَلْ هُمْ فِيْ شَكٍّ مِّنْهَا ۫ بَلْ هُمْ مِّنْهَا

उन के इल्म का सिलसिला आख़िरत के जानने तक पहुंच गया[119] कोई नहीं वोह उस की त़रफ़ से शक में हैं[120] बल्कि वोह उस से

عَمُوْنَ ﴿٦٦﴾ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا ءَاِذَا كُنَّا تُرٰبًا وَّاٰبَآؤُنَآ اَئِنَّا ع

अन्धे हैं और काफ़िर बोले क्या जब हम और हमारे बाप दादा मिट्टी हो जाएंगे क्या हम फिर

لَمُخْرَجُوْنَ ﴿٦٧﴾ لَقَدْ وُعِدْنَا هٰذَا نَحْنُ وَاٰبَآؤُنَا مِنْ قَبْلُ ۙ اِنْ هٰذَآ

निकाले जाएंगे[121] बेशक इस का वा'दा दिया गया हम को और हम से पहले हमारे बाप दादाओं को येह तो

اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٦٨﴾ قُلْ سِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ

नहीं मगर अगलों की कहानियां[122] तुम फ़रमाओ ज़मीन में चल कर देखो कैसा

كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿٦٩﴾ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُنْ فِيْ ضَيْقٍ مِّمَّا

हुवा अन्जाम मुजरिमों का[123] और तुम इन पर ग़म न खाओ[124] और इन के मक्र से दिलतंग

115 : उस की मौत के बा'द। अगर्चे मौत के बा'द ज़िन्दा किये जाने के कुफ़्फ़ार मुक़िर व मो'तरिफ़ न थे, लेकिन जब कि इस पर बराहीन क़ाइम हैं तो उन का इक़्रार न करना कुछ क़ाबिले लिहाज़ नहीं बल्कि जब वोह इब्तिदाई पैदाइश के क़ाइल हैं तो उन्हें इआ़दे का क़ाइल होना पड़ेगा क्यूं कि इब्तिदा इआ़दे पर दलालते क़विय्या करती है, तो अब उन के लिये कोई जाए उ़ज़्र व इन्कार बाक़ी नहीं रही। **116 :** आस्मान से बारिश और ज़मीन से नबातात। **117 :** अपने इस दा'वे में कि अल्लाह के सिवा और भी मा'बूद हैं, तो बताओ जो जो सिफ़ात व कमालात ऊपर ज़िक्र किये गए वोह किस में हैं और जब अल्लाह के सिवा ऐसा कोई नहीं तो फिर किसी दूसरे को किस त़रह़ मा'बूद ठहराते हो ? यहां ''هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ'' फ़रमा कर उन के इ़ज्ज़ व बुत़्लान का इज़्हार मन्ज़ूर है। **118 :** वोही जानने वाला है, गै़ब का उस को इख़्तियार है, जिसे चाहे बताए, चुनान्चे अपने प्यारे अम्बिया को बताता है जैसा कि सूरए आले इमरान में है। ''وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُطْلِعَكُمْ عَلَى الْغَيْبِ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَجْتَبِيْ مِنْ رُّسُلِهٖ مَنْ يَّشَآءُ'' या'नी अल्लाह की शान नहीं कि तुम्हें गै़ब का इ़ल्म दे, हां अल्लाह चुन लेता है अपने रसूलों में से जिसे चाहे। और ब कसरत आयात में अपने प्यारे रसूलों को गै़बी उ़लूम अ़त़ा फ़रमाने का ज़िक्र फ़रमाया गया और ख़ुद इसी पारे में इस से अगले रुकूअ़ में वारिद है। ''وَمَا مِنْ غَآئِبَةٍ فِي السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ'' या'नी जितने गै़ब हैं आस्मान व ज़मीन के सब एक बताने वाली किताब में हैं। **शाने नुज़ूल :** येह आयत मुशरिकीन के ह़क़ में नाज़िल हुई जिन्हों ने रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से क़ियामत के आने का वक़्त दरयाफ़्त किया था। **119 :** और उन्हें क़ियामत क़ाइम होने का इ़ल्म व यक़ीन ह़ासिल हो गया जो वोह उस का वक़्त दरयाफ़्त करते हैं ? **120 :** उन्हें अभी तक क़ियामत के आने का यक़ीन नहीं है **121 :** अपनी क़ब्रों से ज़िन्दा ? **122 :** या'नी (مَعَاذَ اللّٰه) झूटी बातें। **123 :** कि वोह इन्कार के सबब अ़ज़ाब से

www.dawateislami.net

يَمْكُرُوْنَ ﴿٧٠﴾ وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٧١﴾ قُلْ

न हो[125] और कहते हैं कब आएगा येह वा'दा[126] अगर तुम सच्चे हो तुम फ़रमाओ

عَسٰۤى اَنْ يَّكُوْنَ رَدِفَ لَكُمْ بَعْضُ الَّذِيْ تَسْتَعْجِلُوْنَ ﴿٧٢﴾ وَاِنَّ رَبَّكَ

क़रीब है कि तुम्हारे पीछे आ लगी हो बा'ज़ वोह चीज़ जिस की तुम जल्दी मचा रहे हो[127] और बेशक तेरा रब

لَذُوْ فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُوْنَ ﴿٧٣﴾ وَاِنَّ رَبَّكَ

फ़ज़्ल वाला है आदमियों पर[128] लेकिन अक्सर आदमी हक़ नहीं मानते[129] और बेशक तुम्हारा रब

لَيَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُوْرُهُمْ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ﴿٧٤﴾ وَمَا مِنْ غَآئِبَةٍ فِي السَّمَآءِ

जानता है जो उन के सीनों में छुपी है और जो वोह ज़ाहिर करते हैं[130] और जितने ग़ैब हैं आस्मान

وَالْاَرْضِ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ﴿٧٥﴾ اِنَّ هٰذَا الْقُرْاٰنَ يَقُصُّ عَلٰى بَنِيْۤ

और ज़मीन के सब एक बताने वाली किताब में हैं[131] बेशक येह क़ुरआन ज़िक्र फ़रमाता है बनी

اِسْرَآءِيْلَ اَكْثَرَ الَّذِيْ هُمْ فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿٧٦﴾ وَاِنَّهٗ لَهُدًى وَّ

इसराईल से अक्सर वोह बातें जिस में वोह इख़्तिलाफ़ करते हैं[132] और बेशक वोह हिदायत और

رَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٧٧﴾ اِنَّ رَبَّكَ يَقْضِيْ بَيْنَهُمْ بِحُكْمِهٖ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ

रह़मत है मुसल्मानों के लिये बेशक तुम्हारा रब उन के आपस में फ़ैसला फ़रमाता है अपने हुक्म से और वोही है इ़ज़्ज़त वाला

الْعَلِيْمُ ﴿٧٨﴾ فَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ؕ اِنَّكَ عَلَى الْحَقِّ الْمُبِيْنِ ﴿٧٩﴾ اِنَّكَ لَا

इ़ल्म वाला तो तुम अल्लाह पर भरोसा करो बेशक तुम रोशन हक़ पर हो बेशक तुम्हारे

تُسْمِعُ الْمَوْتٰى وَلَا تُسْمِعُ الصُّمَّ الدُّعَآءَ اِذَا وَلَّوْا مُدْبِرِيْنَ ﴿٨٠﴾ وَمَاۤ

सुनाए नहीं सुनते मुर्दे[133] और न तुम्हारे सुनाए बहरे पुकार सुनें जब फिरें पीठ दे कर[134] और

हलाक किये गए। **124 :** इन के ए'राज़ व तक्ज़ीब करने और इस्लाम से महरूम रहने के सबब **125 :** क्यूं कि अल्लाह आप का हाफ़िज़ो नासिर है। **126 :** या'नी येह वा'दए अ़ज़ाब कब पूरा होगा **127 :** या'नी अ़ज़ाबे इलाही। चुनान्चे वोह अ़ज़ाब रोज़े बद्र उन पर आ ही गया और बाक़ी को वोह बा'दे मौत पाएंगे। **128 :** इसी लिये अ़ज़ाब में ताख़ीर फ़रमाता है। **129 :** और शुक्र गुज़ारी नहीं करते और अपनी जहालत से अ़ज़ाब की जल्दी करते हैं। **130 :** या'नी रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के साथ अ़दावत रखना और आप की मुख़ालफ़त में मक्कारियां करना सब कुछ अल्लाह तआ़ला को मा'लूम है, वोह इस की सज़ा देगा। **131 :** या'नी लौहे महफ़ूज़ में सब्त हैं और जिन्हें उन का देखना ब फ़ज़्ले इलाही मुयस्सर है उन के लिये ज़ाहिर हैं। **132 :** दीनी उमूर में। अहले किताब ने आपस में इख़्तिलाफ़ किया उन के बहुत फ़िर्क़े हो गए और आपस में ला'न त़ा'न करने लगे तो क़ुरआने करीम ने इस का बयान फ़रमाया। ऐसा बयान किया कि अगर वोह इन्साफ़ करें और इस को क़बूल करें और इस्लाम लाएं तो उन में येह बाहमी इख़्तिलाफ़ बाक़ी न रहे। **133 :** मुर्दों से मुराद यहां कुफ़्फ़ार हैं जिन के दिल मुर्दा हैं। चुनान्चे इसी आयत में उन के मुक़ाबिल अहले ईमान का ज़िक्र फ़रमाया। "اِنْ تُسْمِعُ اِلَّا مَنْ يُّؤْمِنُ بِاٰيٰتِنَا" जो लोग इस आयत से मुर्दों के न सुनने

www.dawateislami.net

اَنْتَ بِهٰدِی الْعُمْیِ عَنْ ضَلٰلَتِهِمْ ؕ اِنْ تُسْمِعُ اِلَّا مَنْ یُّؤْمِنُ بِاٰیٰتِنَا

अन्धों को[135] उन की गुमराही से तुम हिदायत करने वाले नहीं तुम्हारे सुनाए तो वोही सुनते हैं जो हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं[136]

فَهُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿۸۱﴾ وَ اِذَا وَقَعَ الْقَوْلُ عَلَیْهِمْ اَخْرَجْنَا لَهُمْ دَآبَّةً مِّنَ

और वोह मुसल्मान हैं और जब बात उन पर आ पड़ेगी[137] हम ज़मीन से उन के लिये एक चौपाया निकालेंगे[138]

الْاَرْضِ تُكَلِّمُهُمْ ۙ اَنَّ النَّاسَ كَانُوْا بِاٰیٰتِنَا لَا یُوْقِنُوْنَ ﴿۸۲﴾ وَ یَوْمَ ع

जो लोगों से कलाम करेगा[139] इस लिये कि लोग हमारी आयतों पर ईमान न लाते थे[140] और जिस दिन

نَحْشُرُ مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ فَوْجًا مِّمَّنْ یُّكَذِّبُ بِاٰیٰتِنَا فَهُمْ یُوْزَعُوْنَ ﴿۸۳﴾

उठाएंगे हम हर गुरौह में से एक फ़ौज जो हमारी आयतों को झुटलाती है[141] तो उन के अगले रोके जाएंगे कि पिछले उन से आ मिलें

حَتّٰۤی اِذَا جَآءُوْ قَالَ اَكَذَّبْتُمْ بِاٰیٰتِیْ وَ لَمْ تُحِیْطُوْا بِهَا عِلْمًا اَمَّا ذَا

यहां तक कि जब सब हाज़िर हो लेंगे[142] फ़रमाएगा क्या तुम ने मेरी आयतें झुटलाईं हालां कि तुम्हारा इल्म उन तक न पहुंचता था[143] या क्या

كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۸۴﴾ وَ وَقَعَ الْقَوْلُ عَلَیْهِمْ بِمَا ظَلَمُوْا فَهُمْ لَا یَنْطِقُوْنَ ﴿۸۵﴾

काम करते थे[144] और बात पड़ चुकी उन पर[145] उन के ज़ुल्म के सबब तो वोह अब कुछ नहीं बोलते[146]

اَلَمْ یَرَوْا اَنَّا جَعَلْنَا الَّیْلَ لِیَسْكُنُوْا فِیْهِ وَ النَّهَارَ مُبْصِرًا ؕ اِنَّ فِیْ

क्या उन्हों ने न देखा कि हम ने रात बनाई कि इस में आराम करें और दिन को बनाया सुझाने (दिखाने) वाला बेशक

पर इस्तिद्लाल करते हैं उन का इस्तिद्लाल ग़लत है, चूंकि यहां मुर्दा कुफ़्फ़ार को फ़रमाया गया और इन से भी मुत्लक़न हर कलाम के सुनने की नफ़ी मुराद नहीं है बल्कि पन्दो मौइज़त और कलामे हिदायत के ब सम्ए क़बूल सुनने की नफ़ी है (या'नी सुन कर क़बूल नहीं करते) और मुराद येह है कि काफ़िर मुर्दा दिल हैं कि नसीहत से मुन्तफ़ेअ नहीं होते। इस आयत के मा'ना येह बताना कि मुर्दे नहीं सुनते बिल्कुल ग़लत है, सहीह अहादीस से मुर्दों का सुनना साबित है। **134 :** मा'ना येह हैं कि कुफ़्फ़ार ग़ायते ए'राज़ व रू गर्दानी से मुर्दे और बहरे के मिस्ल हो गए हैं कि उन्हें पुकारना और हक़ की दा'वत देना किसी तरह नाफ़ेअ नहीं होता। **135 :** जिन की बसीरत जाती रही और दिल अन्धे हो गए। **136 :** जिन के पास समझने वाले दिल हैं और जो इल्मे इलाही में सआदते ईमान से बहरा अन्दोज़ होने वाले हैं। (بیضاوی وکبیر وابوالسعود ومدارک) **137 :** या'नी उन पर ग़ज़बे इलाही होगा और अज़ाब वाजिब हो जाएगा और हुज्जत पूरी हो चुकेगी इस तरह कि लोग امر بالمعروف और نہی عن المنکر तर्क कर देंगे और उन की दुरुस्ती की कोई उम्मीद बाक़ी न रहेगी या'नी क़ियामत क़रीब हो जाएगी और उस की अलामतें ज़ाहिर होने लगेंगी और उस वक़्त तौबा नफ़्अ न देगी। **138 :** उस चौपाए को दाब्बतुल अर्द कहते हैं। येह अजीब शक्ल का जानवर होगा जो कोहे सफ़ा से बरआमद हो कर तमाम शहरों में बहुत जल्द फिरेगा, फ़साहत के साथ कलाम करेगा, हर शख़्स की पेशानी पर एक निशान लगाएगा, ईमानदारों की पेशानी पर असाए मूसा عَلَیْهِ السَّلَام से नूरानी ख़त खींचेगा, काफ़िर की पेशानी पर हज़रते सुलैमान عَلَیْهِ السَّلَام की अंगुश्तरी से सियाह मोहर लगाएगा। **139 :** ब ज़बाने फ़सीह और कहेगा "هٰذَا مُؤْمِنٌ وَهٰذَا كَافِرٌ" येह मोमिन है और येह काफ़िर है। **140 :** या'नी क़ुरआने पाक पर ईमान न लाते थे जिस में बअ्स व हिसाब व अज़ाब व ख़ुरूजे दाब्बतुल अर्द का बयान है। इस के बा'द की आयत में क़ियामत का बयान फ़रमाया जाता है। **141 :** जो कि हम ने अपने अम्बिया पर नाज़िल फ़रमाईं। फ़ौज से मुराद जमाअ़ते कसीरा है। **142 :** रोज़े क़ियामत मौक़िफ़े हिसाब में। **143 :** और तुम ने उन की मा'रिफ़त हासिल न की थी बिग़ैर सोचे समझे ही उन आयतों का इन्कार कर दिया। **144 :** जब तुम ने उन आयतों को भी नहीं, सोचा तुम बेकार तो नहीं पैदा किये गए थे। **145 :** अज़ाब साबित हो चुका **146 :** कि उन के लिये कोई हुज्जत और कोई गुफ़्तगू बाक़ी नहीं है। एक क़ौल येह भी है कि अज़ाब उन पर इस तरह छा जाएगा कि वोह बोल न सकेंगे।

www.dawateislami.net

ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٨٦﴾ وَيَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّوْرِ فَفَزِعَ مَنْ

इस में ज़रूर निशानियां हैं उन लोगों के लिये कि ईमान रखते हैं[147] और जिस दिन फूंका जाएगा सूर[148] तो घबराए जाएंगे

فِي السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ اِلَّا مَنْ شَآءَ اللّٰهُ ؕ وَكُلٌّ اَتَوْهُ

जितने आस्मानों में हैं और जितने ज़मीन में हैं[149] मगर जिसे ख़ुदा चाहे[150] और सब उस के हुज़ूर हाज़िर हुए

دٰخِرِيْنَ ﴿٨٧﴾ وَتَرَى الْجِبَالَ تَحْسَبُهَا جَامِدَةً وَّهِيَ تَمُرُّ مَرَّ السَّحَابِ ؕ

आजिज़ी करते[151] और तू देखेगा पहाड़ों को ख़याल करेगा कि वोह जमे हुए हैं और वोह चलते होंगे बादल की चाल[152]

صُنْعَ اللّٰهِ الَّذِيْٓ اَتْقَنَ كُلَّ شَيْءٍ ؕ اِنَّهٗ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَفْعَلُوْنَ ﴿٨٨﴾ مَنْ

येह काम है अल्लाह का जिस ने हिक्मत से बनाई हर चीज़ बेशक उसे ख़बर है तुम्हारे कामों की जो

جَآءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ خَيْرٌ مِّنْهَا ۚ وَهُمْ مِّنْ فَزَعٍ يَّوْمَئِذٍ اٰمِنُوْنَ ﴿٨٩﴾ وَ

नेकी लाए[153] उस के लिये उस से बेहतर सिला है[154] और उन को उस दिन की घबराहट से अमान है[155] और

مَنْ جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ فَكُبَّتْ وُجُوْهُهُمْ فِي النَّارِ ؕ هَلْ تُجْزَوْنَ اِلَّا مَا

जो बदी लाए[156] तो उन के मुंह औंधाए गए आग में[157] तुम्हें क्या बदला मिलेगा मगर उसी का

كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٠﴾ اِنَّمَآ اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ رَبَّ هٰذِهِ الْبَلْدَةِ الَّذِيْ

जो करते थे[158] मुझे तो येही हुक्म हुवा है कि पूजूं उस शहर के रब को[159] जिस ने उसे

147 : और आयत में बअ्स बा'दल मौत पर दलील है, इस लिये कि जो दिन की रोशनी को शब की तारीकी से और शब की तारीकी को दिन की रोशनी से बदलने पर क़ादिर है वोह मुर्दे को ज़िन्दा करने पर भी क़ादिर है। नीज़ इन्क़िलाबे लैलो नहार से येह भी मा'लूम होता है कि इस में उन की दुन्यवी ज़िन्दगी का इन्तिज़ाम है तो येह अ़बस नहीं किया गया, बल्कि इस ज़िन्दगानी के आ'माल पर अ़ज़ाब व सवाब का तरत्तुब मुक़्तज़ाए हिक्मत है। और जब दुन्या दारुल अ़मल है तो ज़रूरी है कि एक दारे आख़िरत भी हो वहां की ज़िन्दगानी में यहां के आ'माल की जज़ा मिले। 148 : और इस के फूंकने वाले हज़रते इसराफ़ील عَلَيْهِ السَّلَام होंगे। 149 : ऐसा घबराना जो सबबे मौत होगा। 150 : और जिस के क़ल्ब को अल्लाह तआ़ला सुकून अ़ता फ़रमाए। हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि येह शुहदा हैं जो अपनी तलवारें गलों में हमाइल किये अ़र्श के गिर्द हाज़िर होंगे। हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया वोह शुहदा हैं इस लिये कि वोह अपने रब के नज़्दीक ज़िन्दा हैं فَزَع (ऐसा ख़ौफ़ जो मौत का सबब हो) उन को न पहुंचेगा। एक क़ौल येह है कि नफ़्ख़े के बा'द हज़रते जिब्रील व मीकाईल व इसराफ़ील व इज़राईल ही बाक़ी रहेंगे। 151 : या'नी रोज़े क़ियामत, सब लोग बा'दे मौत ज़िन्दा किये जाएंगे और मौक़िफ़ में अल्लाह तआ़ला के हुज़ूर आजिज़ी करते हाज़िर होंगे। सीग़ए माज़ी से ता'बीर फ़रमाना तहक़्क़ुक़ व वुक़ूअ़ के लिये है। 152 : मा'ना येह हैं कि नफ़्ख़े के वक़्त पहाड़ देखने में तो अपनी जगह साबित व क़ाइम मा'लूम होंगे और हक़ीक़त में वोह मिस्ल बादलों के निहायत तेज़ चलते होंगे जैसे कि बादल वग़ैरा बड़े जिस्म चलते हैं मुतहर्रिक मा'लूम नहीं होते यहां तक कि वोह पहाड़ ज़मीन पर गिर कर उस के बराबर हो जाएंगे। फिर रेज़ा रेज़ा हो कर बिखर जाएंगे। 153 : नेकी से मुराद कलिमए तौहीद की शहादत है। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि इख़्लासे अ़मल। और बा'ज़ ने कहा कि हर ताअ़त जो अल्लाह के लिये की हो। 154 : जन्नत और सवाब 155 : जो ख़ौफ़े अ़ज़ाब से होगी। पहली घबराहट जिस का ऊपर की आयत में ज़िक्र हुवा है वोह इस के इलावा है। 156 : या'नी शिर्क 157 : या'नी वोह औंधे मुंह आग में डाले जाएंगे और जहन्नम के ख़ाज़िन उन से कहेंगे 158 : या'नी शिर्क और मआ़सी। और अल्लाह तआ़ला अपने रसूल से फ़रमाएगा कि आप फ़रमा दीजिये कि 159 : या'नी मक्कए मुकर्रमा के। और अपनी इबादत उस रब के साथ ख़ास करूं। मक्कए मुकर्रमा का ज़िक्र इस लिये है कि वोह नबिय्ये करीम

www.dawateislami.net

حَرَّمَهَا وَلَهٗ كُلُّ شَیْءٍ ۪ وَّ اُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْمُسْلِمِیْنَ ﴿۹۱﴾ۙ وَ اَنْ

हुरमत वाला किया है[160] और सब कुछ उसी का है और मुझे हुक्म हुवा है कि फ़रमां बरदारों में होउं और येह कि

اَتْلُوَا الْقُرْاٰنَ ۚ فَمَنِ اهْتَدٰى فَاِنَّمَا یَهْتَدِیْ لِنَفْسِهٖ ۚ وَ مَنْ ضَلَّ

कुरआन की तिलावत करूं[161] तो जिस ने राह पाई उस ने अपने भले को राह पाई[162] और जो बहके[163]

فَقُلْ اِنَّمَاۤ اَنَا مِنَ الْمُنْذِرِیْنَ ﴿۹۲﴾ وَ قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ سَیُرِیْكُمْ اٰیٰتِهٖ

तो फ़रमा दो कि मैं तो येही डर सुनाने वाला हूं[164] और फ़रमाओ कि सब ख़ूबियां अल्लाह के लिये हैं अ़न्क़रीब वोह तुम्हें अपनी निशानियां दिखाएगा

فَتَعْرِفُوْنَهَا ؕ وَ مَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿۹۳﴾ ع ۹

तो उन्हें पहचान लोगे[165] और ऐ महबूब तुम्हारा रब ग़ाफ़िल नहीं ऐ लोगो तुम्हारे आ'माल से

اٰیاتها ۸۸ | ۲۸ سُوْرَةُ الْقَصَصِ مَكِّيَّةٌ ۴۹ | رکوعاتها ۹

सूरए क़सस मक्किय्या है, इस में अठासी आयतें और नव रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रहम वाला[1]

طٰسٓمٓ ﴿۱﴾ تِلْكَ اٰیٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِیْنِ ﴿۲﴾ نَتْلُوْا عَلَیْكَ مِنْ نَّبَاِ مُوْسٰى

येह आयतें हैं रोशन किताब की[2] हम तुम पर पढ़ें मूसा

وَ فِرْعَوْنَ بِالْحَقِّ لِقَوْمٍ یُّؤْمِنُوْنَ ﴿۳﴾ اِنَّ فِرْعَوْنَ عَلَا فِی الْاَرْضِ وَ

और फ़िरऔ़न की सच्ची ख़बर उन लोगों के लिये जो ईमान रखते हैं बेशक फ़िरऔ़न ने ज़मीन में ग़लबा पाया था[3] और

جَعَلَ اَهْلَهَا شِیَعًا یَّسْتَضْعِفُ طَآىِٕفَةً مِّنْهُمْ یُذَبِّحُ اَبْنَآءَهُمْ وَ

उस (ज़मीन) के लोगों को अपना ताबेअ़ बना लिया उन में एक गुरोह को[4] कमज़ोर देखता उन के बेटों को ज़ब्ह करता और

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم का वत्न और वह्य का जाए नुज़ूल है। **160 :** कि वहां न किसी इन्सान का ख़ून बहाया जाए न कोई शिकार मारा जाए न वहां की घांस काटी जाए। **161 :** मख़्लूक़े ख़ुदा को ईमान की दा'वत देने के लिये। **162 :** उस का नफ़्अ़ व सवाब वोह पाएगा **163 :** और रसूले ख़ुदा की इताअ़त न करे और ईमान न लाए **164 :** मेरे ज़िम्मे पहुंचा देना था वोह मैं ने अन्जाम दिया (هٰذِهٖ اٰيَةٌ نَسَخَتْهَا اٰيَةُ الْقِتَال) **165 :** इन निशानियों से मुराद शक़्क़े क़मर वग़ैरा मो'जिज़ात हैं और वोह उ़क़ूबतें जो दुन्या में आईं जैसे कि बद्र में कुफ़्फ़ार का क़त्ल होना, क़ैद होना, मलाएका का उन्हें मारना। **1 :** सूरए क़सस मक्किय्या है सिवाए चार आयतों के जो "اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ" से शुरूअ़ हो कर "لَا نَبْتَغِي الْجَاهِلِيْنَ" पर ख़त्म होती हैं, और इस सूरत में एक आयत "اِنَّ الَّذِيْ فَرَضَ" ऐसी है जो मक्कए मुकर्रमा और मदीनए तय्यिबा के दरमियान नाज़िल हुई। इस सूरत में नव 9 रुकूअ़ अठासी 88 आयतें और चार सो इक्तालीस 441 कलिमे और पांच हज़ार आठ सो 5800 हर्फ़ हैं। **2 :** जो हक़ को बातिल से मुमताज़ करती है। **3 :** या'नी सर ज़मीने मिस्र में उस का तसल्लुत था और वोह ज़ुल्मो तकब्बुर में इन्तिहा को पहुंच गया था, हत्ता कि उस ने अपनी अ़ब्दिय्यत और बन्दा होना भी भुला दिया था। **4 :** या'नी बनी इसराईल को।

www.dawateislami.net